राष्ट्रवाद के अग्रदूत महर्षि श्री अरविंद घोष

आरती विश्वकर्मा

शोधार्थी (राजनीति विज्ञान)

शोध-सार

विलक्षण प्रतिभा के धनी राष्ट्रवाद के अग्रदूत महर्षि श्री अरविंद घोष देश प्रेम एवं देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत अपनी रचनाओं के माध्यम से देश के युवा वर्ग में जोश भरने के साथ ही विश्व –पटल पर भी अपनी ओजस्वीम वाणी से गुंजायमान कर दिये थे। उनके बारे में महाकवि रवींद्र नाथ ठाकुर लिखते हैं "कि अरविंद घोष भारती संस्कृति एवं सभ्यता के मसीहा है उनके माध्यम से भारत की वाणी संपूर्ण विश्व में सुनी जाएगी।" एक भारतीय होते हुए अरविंद की शिक्षा-दीक्षा पश्चात शिक्षा पश्चाुत्यत संस्कृाति के अंतर्गत हुई तथा रहन-सहन भेष भूषा आचार-विचार सब अंग्रेजी रंग में ढालने का प्रयत्न उनके पिताजी द्वारा पूर्ण प्रयास किया गया था, किंतु अरविंद पर इनका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा हालांकि वे उच्च शिक्षा हेतु इंग्लैंड गए और अपनी संपूर्ण शिक्षा अंग्रेजीयत संस्कृति में रहकर की किंतु वे एक भारतीय थे और भारतीय संस्कृति की झलक उनके अंतर चेतना में कहीं न कहीं अपने राष्ट्र की ओर उन्मुख करने को प्रेरित कर रही थी। यही राष्ट्र प्रेम की भावना ने उन्हें प्रेरित किया और उन्होंने अध्यात्मवाद स्वराज एवं निष्क्रीरय प्रतिरोध राष्ट्रवाद एवं राज्य के संबंध में अपने विचारों को गध एवं पध के माध्यम से देश की स्वतंत्रता के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। इस प्रकार अरविंद के विचारों में राष्ट्रवाद की अवधारणा को भारत की प्राचीन अध्यात्मवादी संस्कृति पर आधारित किए हैं लेकिन उन्होंने उसे वैश्विक स्वरूप प्रदान करते हुए मानवतावादी रूप भी प्रदान कर दिया ताकि वे भारत के कल्याण की ही नहीं, संपूर्ण विश्व के कल्याण की एक सशक्तन साधन सिद्ध हो सके। डॉ. कर्ण सिंह के अनुसार अरविंद की राष्ट्रवादी अवधारणां उन्हेंक संकीर्ण राष्ट्रवाद के प्रतिपादकों की श्रेणी में न रहकर राष्ट्रवाद के अग्रदूत एक नवीन व्याख्याकार एवं परम उदारवादी विचारक के रूप में प्रस्तुत करती हैं।

शब्द बीज

विलक्षण अध्यात्मवादी, संस्कृति अन्तश्चेतना, संकीर्ण राष्ट्रवाद, निष्क्रिय प्रतिरोध।

शोध विस्तार

अपने उग्रवादी एवं क्रांतिकारी विचारों को अपनी लेखनी के द्वारा समाज में रहते हुए अंग्रेजी शासन से भारतीयों को स्वतंत्रता दिलाने हेतु सतत् प्रयत्नदशील रहे। अरविंद घोष का जन्म 15 अगस्त सन् 1872 में बंगाल कोन नगर में अंग्रेजी रंग ढंग में ढले एक ऐसे परिवार में हुआ था जो पाश्चात्य संस्कृति एवं सभ्यता में विश्वास रखते थे और अपने पारिवारिक परिवेश को भी पूरी तरह अंग्रेजीयत में ढाल चुके थे। अरविंद के पिता का नाम डॉक्टर कृष्णाधन है और जो परिवार के मुखिया कहे जाते थे। उन्होंने अपने सभी संतानों की शिक्षा-दीक्षा अंग्रेजी शिक्षंण प्रणाली के अंतर्गत दिलाई जिनसे अरविंद भी अछूता नहीं रह सके इनको भी पूरी शिक्षा उनके पिताजी ने अंग्रेजी शिक्षा के माध्यिम से ही दिलाई तथा अपने निर्णयअनुसार उन्होंने बाल अरविंद को प्राथमिक शिक्षा हेतु दार्जिलिंग लोरेटो कॉन्वेंट स्कूल में दाखिला दिला दिया। आगे उच्चं शिक्षा के लिए इन्हें्ं इंग्लेटण्ड जाना पड़ा जहां उन्होंने लगभग 14 वर्ष रहकर कई भाषाओं का ज्ञान अर्जित किया जिसमें अंग्रेजी ग्रीक लेटिन भाषा में पूर्णतया इनका अधिकार भी प्राप्त हो गया था। आगे उन्होंने पिताजी की इच्छा के अनुरूप सिविल सेवा की परीक्षा भी उत्तीहण कर ली थी किंतु अपनी अनिच्छाम के कारण घुड़सवारी की परीक्षा में अनुत्तीरण हो गए। एक भारतीय होने के बावजूद उनके पिताजी अंग्रेजी शिक्षा के माध्यम से अपने पुत्र को शाही परिवेश में ढालना चाहते थे किंतु अरविंद पर इसका विपरीत प्रभाव पड़ा उनमें अपने भारतीय होने की झलक इंग्लैंड में रहकर ही अंग्रेजी शासन की प्रक्रिया के रूप में दिखाई पड़ रहा था सन 1893 में इंग्लैंड से भारत लौट आए और एक भारतीय बनकर अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त कर यहां उन्होंने कुछ दिन बड़ौदा नरेश के निज सचिव के रूप में कुछ दिन कार्य किया किंतु असहजता के कारण इन्होंने वही एक महाविद्यालय में प्राध्यापक पद पर रहकर उप आचार्य के रूप में भी कार्य किया बड़ौदा का काल अरविंद के जीवन का एक नव निर्माण काल था जिसके अंतर्गत उन्होंने संस्कृत के के साथ-साथ कई प्रादेशिक भाषाओं का ज्ञान भी अर्जित किया जिसके फलस्वंरूप संस्कृत के ग्रंथों का अध्ययन भी किया। यहीं से उनके अपने जीवन का आध्यात्मिकता की ओर झुकाव एवं भारतीय होने का

गौरव की अनुभूती भी हुई तथा एक राजनीतिक शुरुआत का एक अनोखा मोड़ भी आया। सन् 1902 के कांग्रेस के अहमदाबाद अधिवेशन में उन्होंने भाग लिया उसके बाद सन 1905 में कांग्रेस की बनारस अधिवेशन में लाला लाजपत राय के संपर्क में आए और उनके द्वारा रखे गए निष्क्रीसय प्रतिरोध के प्रस्ताव से वह अधिक प्रभावित हुए जो कालांतर में अरविंद के राष्ट्रवादी विचारों में अपने उग्र लेकिन राष्ट्रवाद के अग्रदूत के रूप में एक पहचान मिली। सन 1906 की बंग भंग आंदोलन में महर्षि अरविंद के जीवन की एक महत्वपूर्ण राजनीतिक शुरुआत ही नहीं अपितु एक तरह से क्रांतिकारीमोड़ आया जिससे प्रभावित होकर वे अपने बड़ौदा महाविद्यालय की सेवा को छोड़कर छोड़ दिया सक्रिय रूप से राजनीति में कूद पड़े तथा अपने उग्रवादी क्रांतिकारी विचारों और प्रचार प्रसार के कारण अधिक दिनों तक अंग्रेजी सरकार के कुदृष्टि से बच नहीं सके जिसके कारण उन्हें 1908 में जेल भी जाना पड़ा जहां उन्हें एक वर्ष तक अंग्रेजी सत्ता के कार्रवाही में जेल में नजरबंदी का जीवन व्यतीत करना पड़ा यही एक वर्ष अरविंद के जीवन में फिर से एक क्रांतिकारी वैचारिक मोड़ आया वह जेल में रहकर आध्यात्मिक जीवन की तरफ आकर्षित हुए तथा राजनीति का आध्यात्मिकरण अब उनके जीवन का प्रमुख उद्देश्य बन गया। सन् 1910 में महर्षि अरविंद पांडिचेरि जो कि उस समय फ्रांसीसी उपनिवेश था चले गए और अपने जीवन की एक नई शुरुआत अध्यात्म साधना की और उन्मुख किया यहीं पर उन्होंने योग आधारित आईटी अध्यात्म साधना करते हुए अपने सारा जीवन व्यतीत किया और अपनी सुप्रसिद्ध ग्रंथ द लाइफ डिवाइन की रचना की इसके अलावा अन्य ग्रंथ भी लिखे जिनमें से एसेज आन गीता सावित्री द सिथैसिस आफ योग इत्यादि है। उन्होंने ग से उनके ग्रन्थों से हमें यह पता चलता है कि वे पूर्व के धार्मिक साहित्य तथा पश्चिम के तत्व शास्त्र दोनों से भली भांति परिचित थे।

अरविंद का राष्ट्रवाद

अरविंद घोष अपनी विदेश यात्रा के उपरांत देश की अधोगति देखकर बहुत दुखी हो गई क्योंकि उसे समय भारतीय नेता भारत को समर्थ आंदोलन प्रदान नहीं कर पा रहे थे अरविंद घोष लिखते हैं यह सब कुछ हमारी निष्ठा दूरदर्शिता और कार्य तथा विचारों के तत्परता पर निर्भर है लोग मुझे सिद्धांत वादी तथा वाचाल भले ही कहें मैं पुनः बल देकर कहता हूं हमारा प्रथम तथा सबसे

पवित्र कर्तव्य जनता का उत्थान करना और उसे ज्ञान देना है हमारे बीच अनेक ऐसे महानुभाव है जिनकी कार्य प्रणाली गलत भले ही हो किंतु उनमें निष्ठा तथा विचारों के श्रेष्ठता है। अरविंद घोष का राष्ट्रवाद आध्यात्मिकता के आधार पर निर्मित था जिसमें राष्ट्रवाद उनका सर्वोच्च आत्मभाव था वह कहते थे कि राष्ट्रवाद एक धर्म है जो ईश्वर की ओर से आया है ऐसे धर्म आधारित राष्ट्रवाद का जीवन भर पालन करना होगा। यदि कोई व्यक्ति अपनी धार्मिक भावना के साथ राष्ट्रवाद को जोड़ रखे तो ईश्वरीय बल ही उसकी प्राण शक्ति होगी जिस तरह हीगल नेराष्ट्र को इस पृथ्वी पर ईश्वर के अवतरण की संज्ञा दे दी उसी तरह अरविंद घोष भारत देश को मां के समान बताया जिसको मुक्त करने के लिए हर संतान का धार्मिक और नैतिक कर्तव्य है कि वह अपने देश की स्वतंत्रता के लिए भरसक प्रयास करें क्योंकि यूरोपीय कारण ने भारतीयों को राष्ट्रीय एकता एवं आत्मत उत्थान करने के सभी रास्ते बंद कर दिया था सनातन हिंदू धर्म का संबंध भारतीय राष्ट्रवाद को जोड़ने से कई लोगों ने अरविंद घोष को संकीर्ण हिंदू राष्ट्रवादी कहा, जबकि अरविंद के अनुसार हिंदू धर्म शाश्वत और सार्वभौमिक है जिसमें सभी धर्मों की अच्छाइयां निहित है इस तरह अरविंद घोष विश्व मानववाद और अंतरराष्ट्रीय वैचारिकता के प्रतिपादक भी थे जिसमें भारतीय राष्ट्रवाद विकसित हुआ था यही नहीं वे राष्ट्रवाद को विकसित करें स्वतंत्र राष्ट्र के माध्यम से पराधीनता असमानता एवं दासतां के उन्मूलन पर भी बल देते थे। ऐसी विचारधारा से प्रेरित अरविंद घोषभारत के ही नहीं अपितु विश्व कल्याण के लिए सदैव तत्पऐर थे, यही कारण था महर्षि डॉक्टर कर्ण सिंह उन्हें नवउदित राष्ट्रवादी एवं पर उदारवादी विचारक कहते हैं महर्षि अरविंद कहते थे कि भारतीय नेताओं को गहरी साधना के साथ अपना आत्मर्थन कर अपने विचारों तथा कार्यों में प्रचण्डर शक्ति का परिचय देना चाहिए जिससे हमारे ज्ञान और शक्ति तपस्या एवं साधना अंग्रेजों को डिसिप्लिन फिलासफी स्टैंड आदि से उच्च दिखाई पड़े। यह सत्य है कि तपस्या डिसिप्लिन से अधिक है क्योंकि सर्जन परिक्षण और संहार की देवी शक्तियों को आध्यात्मिक साधना के द्वारा साक्षात्कार प्राप्त करना ही तपस्या है। इसी तरह फिलासफी ज्ञान से बड़ी चीज नहीं है जिसे भारतीय ऋषि परंपरा में प्रत्यक्ष अनुभूति कहा गया है। उन्होंने भारतीय ज्ञान परंपरा को महत्व देते हुए प्राचीन हिंदुओं के वेद, उपनिषद, गीता, योग और तंत्र आदि धर्म ग्रंथो में आध्यात्मिक आध्यात्मिक विवेक और राष्ट्रवादी विचारधाराओं को प्रेरित करने वाली प्रेरणा शक्ति का मूल आधार माना है। इस प्रकार अरविंद घोष और उपयोगितावाद पूंजीवाद

साम्राज्यवाद तथा स्वार्थ मूलक कृत्रिम नैतिकता का विरोध करते हुए स्वतंत्र राजनैतिक आध्यात्मिकता से पोषित राष्ट्र के विकास पर बल देते हैं।

निष्कर्ष

इस प्रकार स्पष्ट है कि अरविंद घोष की विचारधारा आज के राजनीतिक मंच पर अधिक प्रासंगिक है जब जातिवाद, संप्रदायवाद, भाषावाद और क्षेत्रवाद के आधार पर न केवल भारत को विभाजित करने का प्रयास किया जा रहा है अपितु वर्ग संघर्ष जैसी भावनाओं बीजारोपंण किया जा रहा है ऐसे में राजनेताओं को योगी की भांति राजनीतिक आदर्श को आदर्शवादी राष्ट्रवाद के रूप में परिष्कृत एवं परिमार्जित कर एक अखंड राष्ट्र तथा विविधता में एकता का पर्याय सिद्ध करना चाहिए जिससे भारत वसुदेव कुटुंबकम के अपने मूल सिद्धांत को प्राप्त कर इस मंच पर अपनी कीर्ति पताका फहरा सके।

संदर्भ ग्रन्थ

1. वी. पी. वर्मा, भारतीय राजनीतिक चिन्तन
2. जीवन मेहता, भारतीय राजनीतिक चिन्तन
3. ओ. पी. गावा, भारतीय राजनीतिक विचारक
4. लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, भारतीय राजनीतिक विचारक
5. विकीपीडिया